4. घनानंद

कवि परिचय –

घनानंद रीतिकाल की रीतिमुक्त स्वच्छंद काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। इनका जीवन और काव्य दोनों अभिन्न हैं। इनका जन्म सन् 1746 में हुआ। इनका संबंध राजदरबार से था। ये मुहम्मदशाह 'रंगीले' के दरबार में प्रतिष्ठित मीर मुंशी पद पर थे। ये कवि तो थे ही , साथ ही साथ गायन विद्या में भी निपुण थे। ये 'रंगीले' के कृपा पात्र थे। दरबार में सुजान नाम की एक वेश्या भी थी, जिससे घनानंद प्रेम करते थे। सभी दरबारी घनानंद से ईर्ष्या करते थे। एक दिन बादशाह ने घनानंद से गाने के लिए कहा। घनानंद ने असमर्थता प्रकट की, तब दरबारियों ने कहा कि सुजानबाई को बुलाया जाए तब घनानंद गाएँगे। घनानंद ने गायन प्रस्तुत किया; किंतु सुजानबाई की ओर उन्मुख होकर। गायन से बादशाह मंत्रमुग्ध हो गए किंतु अपना अपमान समझकर उन्होंने घनानंद को देश-निकाला दे दिया। घनानंद ने सुजान से साथ चलने के लिए कहा किंतु सुजान ने मना कर दिया। इस घटना से व्यथित होकर घनानंद वृंदावन चले गए और निम्बार्क संप्रदाय में दीक्षित हो गए। कहा जाता है कि अंत में नादिरशाह के आक्रमण के समय ये मथुरा में मारे गए थे, परंतु बाद के शोधों से यह सिद्ध हुआ कि अहमदशाह के द्वितीय आक्रमण के समय ये मथुरा में मारे गए थे।

रायकृष्णदास ने अपनी ग्रंथावली में लिखा है कि ''घनानंद का महाराज नागरीदास से निकटतम संबंध था। किंवदंती है कि घनानंद जयपुर से मथुरा आ गए और वहीं उन्होंने कत्लेआम देखा और कत्लेआम करने वालों से कहा कि मुझे तलवार के घाव बहुत थोड़े-थोड़े बहुत देर तक दो। इनको ज्यों-ज्यों तलवार के घाव लगाए गए त्यों-त्यों वह ब्रजरज में लौटते रहे। ऐसे देह त्याग किया।''

घनानंद की रचनाओं में - 'सुजानसागर', 'विरह लीला', 'कोक सार', 'रसकेलि वल्ली', 'कृपाकंद निबंध', 'घनआनन्द कवित्त', 'सुजान हित', 'सुजान हित प्रबंध', 'वियोग बेलि', 'इश्कलता', 'जमुना जस', 'आनन्दघन जू की पदावली', 'प्रीति पावस' एवं 'सुजान विनोद' प्रसिद्ध हैं।

घनानंद प्रेम की पीर के कवि थे। इनके काव्य में वियोग शृंगार की ही प्रधानता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है कि ''प्रेम मार्ग का ऐसा प्रवीण और धीर पथिक तथा जवाँदानी का ऐसा दावा रखने वाला ब्रज भाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ।'' भाषा पर घनानंद का पूरा अधिकार था। ब्रजभाषा की लाक्षणिकता और व्यंजकता की शक्ति को घनानंद में देखा जा सकता है। ब्रजभाषा का शुद्ध मानक और व्यंजक रूप जैसा इनकी कविता में मिलता है, वैसा अन्यत्र कहीं नहीं है।

पाठ परिचय –

प्रस्तुत पाठ में घनानंद के पाँच छंद संकलित हैं। इन पदों में इनकी पीड़ा की अभिव्यक्ति हुई है। विरह की स्थिति अत्यंत पीड़ाकारक होती है और जब प्रिय के दर्शन किसी कारण से दुर्लभ हो जाते हैं, तो स्थिति और भी कारुणिक हो उठती है। प्रेयसी सहानुभूति भी नहीं दिखाती और प्रेमी तड़पता रहता है। प्रेमी प्रेयसी को उपालंभ देकर सचेत भी करता है कि जो दूसरों को कष्ट देता है वह स्वयं भी कष्ट पाता है।

प्रेयसी प्रेमी को दर्शन नहीं देती, किंतु प्रेमी इस आशा से कि कभी तो उसका दिल पसीजेगा, उसकी निष्ठुरता को भी स्वीकार करता है। प्रेम का मार्ग सरल नहीं है। वह समर्पण चाहता है। मन ले लेना और देना छटाँक भर भी नहीं, यह तो निरा स्वार्थ है।

प्रेम–पीर–वर्णन

भोर तैं साँझ लौं कानन-ओर निहारति बावरी नैकु न हारति।
साँझ तै भोर लौं तारनि ताकिबो तारनि सों इकतार न टारति।।
जौ कहूँ भावतो दीठि परै घनआनन्द आँसुनि औसर गारति।
मोहन-सोंहन जोहन की लगियै रहै आँखिन के उर आरति।।1।।

गरल गुमान की गरावनि दसा को पान,
करि करि, द्यौस-रैनि प्रान घट घोटिबो।
हेत-खेत-धूरि चूरि-चूरि साँस पाँव राखि,
विष-समुदेग-बान आगें उर ओटिबो।
जान प्यारे जौ न मन आनैं तौ आनंदघन,
भूलि तू न सुमिरि परेखै चख चोटिबो।
तिन्हैं ये सिराति छाती तोहि वै लगति ताती,
तेरे बाँटें आयौ है अँगारनि पै लोटिबो।।2।।

भए अति निठुर, मिटाय पहिचानि डारी,
याही दुख हमैं जक लागी हाय हाय है।
तुम तौ निपट निरदई, गई भूलि सुधि,
हमैं सूल–सेलनि सो क्यौं हूँ न भुलाय है।
मीठे-मीठे बोल बोलि, ठगी पहिलें तौ तब,
अब जिय जारत, कहौ धौं कौन न्याय है।
सुनी है कै नाहीं, यह प्रगट कहावति जू,
काहू कलपाय है, सु कैसे कल पाय है।।3।।

मीत सुजान अनीत करौ जिन, हा हा न हूजियै मोहि अमोही।
दीठि कौं और कहूँ नहिं, ठौर, फिरी दृग रावरै रूप की दोही।।

एक विसास की टेक गहें लगि, आस रहे बसि प्रान-बटोही।
हौ घनआनंद जीवन मूल दई! कित प्यासनि मारत मोही।।4।।

अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचे चलैं तजि आपनपौ, झिझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।।
घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ, यहाँ एक ते दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो कहौ, मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।5।।

शब्दार्थ –

न हारति–हार नहीं मानती/ तारनि सों–पुतलियों से/इकतार–एकटक/न टारति–नहीं टालती/ भावतो–मन भावन, प्रियतम/ दीठि परै–दृष्टि में आ जाए, दिखाई पड़े/ गारति–गला देती है/ सोंहन–सामने/ जोहन–देखना/ आरति–करुणा, इच्छा, लालसा/ जक–रट/ सूल–सेलनि–काँटों की पीड़ा/कहौ धौं–कहो तो/कलपाय है–कष्ट प्रदान करेगा/कल–चैन/जिन–मत/ मोहि–मोहित करके/ अमोही–निर्मोही/रावरे–तुम्हारे/ दोही–दुहाई/ विसास–विश्वास/ जीवन–मूरि–जल के भण्डार, प्राण के तत्त्व/गुमान–अभिमान/ गरावन–गला देने वाली/ हेत–खेत–धूरि – प्रेम रूपी रण/विष–समुदेग–बान – व्याकुलता का विषैला बाण/ ओटिबो–अड़ाना, सामने करना/ परेखै–पछतावे को/ बाँटें आयौ–हिस्से में आया है/ तहाँ–उस प्रेम–मार्ग में/आपनपौ–अहंकार/ पाटी–पढ़े हो – सीख पाए हो।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. 'कित प्यासनि मारत मोही' पंक्ति का भाव है –
   (क) क्यों प्यासा मारते हो (ख) क्यों मुझसे दूर रहते हो
   (ग) क्यों निर्मोही बने हो (घ) दर्शनों से वंचित क्यों किए हो ( )
2. प्रेम-मार्ग किनके लिए कठिन है –
   (क) कपटियों के लिए (ख) सरल व्यक्तियों के लिए
   (ग) भक्तों के लिए (घ) संन्यासियों के लिए ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. घनानंद किस बादशाह के मीरमुंशी थे ?
2. प्रेम-मार्ग पर कौन सुगमता से चल सकता है ?
3. घनानंद की कोई दो रचनाओं के नाम लिखिए।
4. प्रेम की पीर के सिद्धहस्त कवि कौन थे ?
5. 'भोर तैं साँझ कानन-ओर निहारति।'

विरही के वन की ओर निहारने का क्या कारण है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. मन भावन प्रियतम के सम्मुख होने पर भी विरही को उसका दर्शन-लाभ नहीं मिलता, कारण बताइए।
2. 'मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं' उक्त पंक्ति के आधार पर विरही की पीड़ा स्पष्ट कीजिए।
3. 'मीत सुजान अनीत करौ जिन' छंद में कवि ने सुजान को उपालम्भ क्यों दिया है ?
4. 'विरह की स्थिति अत्यंत करुणाजनक होती है' प्रथम छंद के आधार पर प्रमाणित कीजिए।
5. 'काहू कलपाय है, सु कैसे कल पाय है' पंक्ति का भावार्थ लिखिए।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. घनानंद के काव्य में विरह की प्रधानता है, स्पष्ट कीजिए।
2. पठित छंदों के आधार पर घनानंद की काव्य कला का वर्णन कीजिए।
3. घनानंद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक टिप्पणी लिखिए।
4. पाठ में आए निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

   (क) भए अति निठुर, ...सु कैसे कल पाय है।।

   (ख) अति सूधो सनेह को मारग है,.....मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।

•••